INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS
VOLUME 2, ISSUE ,11 November, 2014
ISSN-2320-2882
ORIGINAL ARTICLE

# भारतीय सिनेमा के सौ साल और अमृता प्रीतम के उपन्यास

*डॉ. खेमसिंह डहेरिया*
*एसोसिएट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग*
*इन्दिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय*
*विश्वविद्यालय, अमरकण्टक (म0प्र0)*

*'राजा हरिश्चन्द्र ' पहली फिल्म बनाकर दादा साहेब फाल्के ने जिस हिन्दी सिनेमा की नींव रखी थी। वह हिन्दी सिनेमा अब सौ साल का हो गया । भारत की प्रथम बोलती फिल्म 'आलम आरा ' इम्पीरियल फिल्म कंपनी ने आर्देशिर ईरानी के निर्देशन में 1931 में बनाई। इस बोलती फिल्म ने समूचे हिन्दी जगत् में क्रांति ला दी । पिछली सदी का तीस का दशक भारतीय सिनेमा में सामाजिक विरोध के रूप में जाना जाता है। इस समय तीन बड़े –बड़े बैनरों प्रभात, बम्बई टॉकीज एवं नया थियेटर ने गंभीर लेकिन मनोरंजक फिल्म बनाई । 1952 में प्रथम अंतर्राष्ट्रीय फिल्म समारोह बंबई में आयोजित किया गया, जिसका भारतीय सिनेमा पर गहरा प्रभाव पड़ा। 1950 से रंगीन फिल्मों का दौर शुरू हुआ, फिल्में ज्यादात्तर प्रेम संबंधों पर आधारित होती थी । इसी दौर में 'लैला–मजनू', 'हीर–रांझा', 'सोनी–महिवाल', शीरी–फरहाद' जैसी फिल्मों ने भारतीय सिनेमा में प्रेम संबंधों को लेकर अपनी लोकप्रियता को कायम रखा । 'प्यार किया तो डरना क्या', 'जो वादा किया वो निभाना पड़ेगा', 'हुस्न हाजिर है मोहब्बत की सजा पाने को' इन गानों से प्रेम के प्रति ईमानदारी का आभास होता है। एक शायर ने कहा है– ''ये इश्क नहीं आसां बस इतना समझ लीजिए, एक आग का दरिया है और डूब के जाना है।''*

ऐसा नहीं है कि फिल्मों ने हिंसा को ही बढ़ावा दिया है। हिन्दी फिल्मों के सौ बरस के इतिहास पर नजर डालें तो संख्या अनुपात में ज्यादा ही दिखती हैं। यही नहीं फिल्मों ने देश के हर वर्ग में भाई–चारे और देशभक्ति की भावना को प्रसारित करने में भी अहम भूमिका निभाई है। हाँ बाजारीकरण, पाश्चात्य चलन एवं सामाजिक तानेबाने के बदलाव ने परिवारों की टूट तो बढ़ा दी है, लेकिन समाज, परिवार एवं माता –पिता के महत्व को फिल्मों के माध्यम से बार–बार प्रमुखता से दर्शाकर फिल्म जगत् ने पारंपरिक भारतीय मूल्यों को बनाकर रखने में भी मदद की है । फिल्मों ने आज जहाँ नारी को बाजार में खड़ा कर दिया है, वही फिल्मों के माध्यम से ही नारी के महत्व एवं समाज में उसके विभिन्न स्वरूपों को महिमामंडित करने के प्रयास भी किए गए हैं। यही नहीं फिल्म जगत् ने कभी सच को सामने लाने वाले, समतामूलक समाज के निर्माण के मिशन के साथ कार्य करने वाले संचार माध्यमों को जहाँ शाबासी दी है, वहीं उसके

बाजार के हाथ की कठपुतली बन जाने पर अनेक फिल्मों के माध्यम से लताड़ भी लगाई है। इन सबके अलावा क्षेत्रीय या देशज भाषाओं एवं राष्ट्रभाषा हिन्दी के उत्थान एवं उन्हें निकट लाने में फिल्मों का अभूतपूर्व योगदान रहा है। निश्चित रूप से सौ सालों के इस सफर में हिन्दी सिनेमा ने न जाने कितने पड़ाव देखे । कभी सिनेमा की शक्ल बदली, कभी सिनेमा के नायक तो कभी नायिकाओं का अन्दाज बदला–बदला नजर आया । इसी संदर्भ में हम यहाँ अमृता प्रीतम के उपन्यासों पर बनी फिल्मों पर चर्चा करेंगे।

कृतिकार का जीवन और उसकी कृति का परस्पर अनुस्यूत संबंध होता है। यह सच है कि लेखक का व्यक्तित्व और उसके व्यक्तित्व की उत्प्रेरक परिस्थितियाँ उसके साहित्य सृजन की पृष्ठभूमि बनाते हैं और उसके समानांतर ही उसका लेखन कर्म गतिमान होता है किन्तु उससे बड़ा सच है कि व्यक्तित्व से मूल्यवान कृतित्व होता है। समाज में श्रेष्ठ व्यक्तित्व के धारक तो अनेक होते हैं किन्तु उनके व्यक्तित्व से मूल्यवान कृतित्व होता है । समाज में श्रेष्ठ व्यक्तित्व के धारक तो अनेक होते हैं, किन्तु उनके व्यक्तित्व की चर्चा की जाती है, जिनका अपना कृतित्व के बिना व्यक्तित्व निष्प्राण देह की तरह हैं। यही कारण है कि अपनी कृतियों के माध्यम से अनपा स्थान बना लेने वाले सर्जकों के व्यक्तित्व की पड़ताल अनिवार्य हो जाती हैं। अमृता जी के आकर्षक, प्रभावी और उथल–पुथल से घिरे जीवन की तरह उनका साहित्य संसार भी विलक्षण है।

अमृता जी के लेखकीय व्यक्तित्व के निर्माण में उनके घरेलू वातावरण की अहं भूमिका रही है। उनका घर किताबों से भरा हुआ था। बहुत सी किताबों का वातावरण धार्मिक था, समाधि में लीन ऋषियों की भांति/पर कई ऐतिहासिक पुस्तकों का वातावरण ऐसा भी था, जिनमें किसी मेनका या उर्वशी के आगमन से ऋषियों की समाधि भंग हो जाती थी। यह दूसरे प्रकार की पुस्तकें ऐसी थी, जिन्हें पढ़ते समय उनकी किसी पंक्ति में से निकलकर अचानक उनका सोलहवां बरस उनके सामने आ खड़ा होता था। अमृता जी कविताएँ लिखने लगी थीं और हर कविता उन्हें वर्जित इच्छा की तरह लगती थी। किसी ऋषि की समाधि टूट जाए तो भटकने का शाप उसके पीछे पड़ जाता है– इसलिए वह भी उनकी तरह उनके पिताजी से सहम जाता था, और उनके पास से हटकर किसी दरवाजे के पीछे जाकर खड़ा हो जाता था, और उसे छिपाए रखने के लिए वे एक क्षण जो मनमर्जी की कविता लिखती थी, दूसरे क्षण फाड़ देती थीं और पिता के सामने फिर सीधी – सादी और आज्ञाकारी बच्ची बन जाती थी।[1]

अमृता के साहित्य सृजन में साहिर का योगदान बहुत ही सराहनीय रहा है । अमृता जी, साहिर को अपने साये के रूप में मानती रही हैं। एक लम्बा और सांवला –सा साया था, जब मैंने चलना सीखा तो साथ चलने लगा।''[2] साहिर के इंतजार पर वे लिखती हैं–''इस तरह हफ्ते गुजर जाते महीने गुजर जाते, कोई समागम होता, तो मैं साहिर की आवाज सुन सकती थी, और जब कभी वो आ जाता, मेरी काली रातें भी सपनों के पैरों तले चांदनी बिछा देती। ''एक दिन वह भी आया साहिर के हाथ में एक कागज था उनकी नज्म का । उन्होंने नज्म पढ़ी और वह कागज अमृता जी को देते हुए जाने क्यों साहिर ने कहा–''इस नज्म में जिस लड़की का जिक्र है, वो जगह मैंने कभी देखी नही और नज्म में जिस लड़की का जिक्र है, वो लड़की कोई .....'' जब अमृता जी कागज लौटाने लगी, तो साहिर ने कहा–''यह मैं वापस ले जाने के लिए नहीं लाया ।[3] तब रात को आसमान पर के तारे उनके दिल की तरह धड़कने लगे और फिर जब वे कोई नज़्म लिखती, लगता उसे खत लिख रही हों। अचानक कई पतझड़े एक साथ आ गईं, साहिर ने पहली बार अमृता जी की नज़्में मांगी और उनकी एक तस्वीर मांगी, ''फिर अखबारें किताबतें जैसे मेरे

डाकिए हो गईं और मेरी नज़्म मेरे खत हो गए उसकी तरफ।''[4] इस तरह अमृता जी के साहित्यिक लेखन को सामने लाने में साहिर का अमूल्य योगदान रहा है। राष्ट्रपति श्री प्रणव मुखर्जी ने ने प्रसिद्ध शायर एवं गीतकार साहिर लुधियानती की जयंती के मौके पर उनकी स्मृति में 8 मार्च मार्च को एक स्मारक डाक टिकट जारी किया । राष्ट्रपति ने इस मौके पर अपने संबोधान में कहा कि साहिर को आम आदमी की रोजमर्रा की पीड़ा और संघर्षों को अभिव्यक्ति देने के लिए जाना जाता है। उन्हें युवाओं के कवि के रूप में भी याद किया जाता है क्योंकि उन्होंने प्रेम और सौन्दर्य पर भी गीत लिखे हैं। समसामयिक सामाजिक चिंताओं और मूल्यों पर गहरी संवेदनशीलता से लेखनी चलाई। साहिर का सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने उर्दू की नज्मों का फिल्मी संगीत में खूबसूरती से ढालने का काम किया । उन्होंने फिल्म राइटर एसोसिएशन के जरिए गीतकारों को मान्यता दिलाने के लिए भी संघर्ष किया । श्री मुखर्जी ने कहा कि साहिर के निधन के 33 वर्ष बाद भी उनकी स्मृति में स्मारक टिकट जारी किया जाना इस बात का परिचायक है कि उनकी कविताएँ और गीत लोगों के दिलों में अब भी रची–बसी हैं।[5]

अमृता जी की कृतियों पर कई फिल्में एवं सीरियल बने, जो इस प्रकार हैं–

**कृतियों पर बनी फिल्में –**

1. पिंजर उपन्यास पर आधारित फिल्म – 'पिंजर'.
2. सागर और सीपियाँ उपन्यास पर आधारित फिल्म – 1975 ई0 में 'कादम्बिरी'.
3. उनकी कहानी उपन्यास पर आधारित फिल्म –1976 ई0 में 'डाकू'.
4. कुछ उपन्यासों पर आधारित टी0वी0सीरियल – 'जिन्दगी'.

**वृत्त चित्र–**

1. जालंधर दूरदर्शन द्वारा उनके जीवन एवं रचना पर फिल्म –1990 ई0 में।

अमृता जी की रचनाओं का अनुवाद हिन्दी एवं पंजाबी के अतिरिक्त भारत की अनेक भाषाओं में हुए है। इतना ही नहीं अंग्रेजी, रशियन, फ्रेन्च आदि आठ विदेशी भाषाओं में भी इनकी कृतियाँ अनुदित हुई हैं। आपको साहित्य अकादमी पुरस्कार, भारतीय ज्ञानपीठ का साहित्य पुरस्कार, पद्म श्री, पद्म विभूषण की उपाधि के साथ ही अनेक प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले। आप राज्यसभा की मनोनीत सांसद भी रहीं हैं।

आपके उपन्यासों पर बनी फिल्मों का विस्तृत विवेचन करना समीचीन होगा–

## नारी देह की पीड़ा का करूण काव्य 'पिंजर'

भारतीय तत्व चिंतन की मान्यता है–''अष्टाचक्रा नवाद्वारा देवानां पुरयोध्याः । तस्यां हिरण्यमया कोशः स्वर्गोज्योतिसवृतः ।'' अर्थात् आठ चक्र और नौ द्वारों वाली यह देह अयोध्या है, जिसमें स्वर्ग की ज्योति स्वरूप वह पवित्र आत्मा वास करती है। यहाँ के दार्शनिक ''नवद्वारे का पींजरा तामें ज्योति पहचान'' का संदेश देकर देह में स्थित आत्मतत्व द्वारा परमात्मा की प्राप्ति का मार्ग सुझाते रहे हैं। इतने दिव्य चिंतन वाले भारतवर्ष के नागरिक दो मुल्कों में बँट जाते हैं तो उनके लिए यह शरीर क्या बन जाता है इसकी जीवंत दास्तान है, अमृता प्रीतम का उपन्यास 'पिंजर'।

'पिंजर' हिन्दू और मुसलमानों के बीच पलने वाली नफरत की पृष्ठभूमि पर लिखा गया एक ऐसा मर्मस्पर्शी उपन्यास है जो नारी देह के भूगोल तक सिमट गए नर पिशाचों की क्रूरता की शिकार अबलाओं

का करूण काव्य हैं । शरीर रूपी पिंजड़े में नारी का शरीर और उसे अपनी वासना की पूर्ति का साधन बनाने वालों के लिए देह ही सब कुछ है, उस देह में अवस्थित नारी की भावनाओं का कोई मूल्य नहीं है।

मुसलमान,हिन्दुओं की बहु– बेटियों को उठाते हैं तो हिन्दू– मुसलमानों की । दोनों ओर बिना संकोच और बिना विचार के यह सिलसिला रहता है। यहाँ नारी पीड़ा के चार रूप दिखाई देते हैं,एक जिसमें नारियों के साथ बलात्कार, सामूहिक बलात्कार होता है, दूसरा जहाँ नारियों के साथ बलात्कार कर उन्हें निर्वस्त्र घुमाया जाता है और फिर मार – काट दिया जाता है। तीसरा उन्हें घर में बसा लिया जाता है और फिर पीड़ा नहीं दी जाती, चौथा जहाँ उन्माद की समाप्ति के बाद वे नारियाँ वापस की जाती हैं। अपने पिता– भाई और पति के साथ वापस आने वाली इन नारियों में कुछ तो पुनः उसी परम्परा में स्वीकार ली जाती हैं और कुछ को परिवारजन स्वीकार नहीं कर पाते । इनका जीवन बड़ा भयावह हो जाता है।

पूरो ने सुना – मुसलमान, हिन्दुओं की लड़कियों को और हिन्दू, मुसलमानों की लड़कियों को उठाकर ले गये हैं। कइयों ने उन्हें अपने घरों में डाल रख लिया है, उन्हें जान से मार डाला है और कइयों को वह नंगा करके गलियों और बाजारों में घुमा रहे हैं।[6] आदमियों को जिंदा जला दिया गया । आधे जले हुए तीन आदमी निकाले गये, जिनके शरीर से चर्बी बह रही थी। एक दिन पूरो देखती है, दस – बारह मनचले युवक एक नंगी जवान लड़की को अपने आगे करके, दोनों हाथों ढोल – ढमाके बजाते गाँव के पास से गुजर रहे हैं। एक लड़की पूरो को बताती है कि पूरी नौ रातें हो गई थी, उसे रोज रात को नये –नये लोगों के घरों में जाना पड़ा था। पिछली रात वह किसी प्रकार अपने ले जाने वाले को धोखा देकर भाग गई थी। पूरो को लाजो का उतरा हुआ चेहरा याद आता है । अल्लादित्ता ने लाजो का अपहरण कर अपने घर रख लिया था। पूरो को लगा, मानो लाजो का मुंह उस चिड़िया के पिंजर की भाँति हो जो इस गलीज चील के पंजों में कई दिन तक फँसी रही हो। इस घर के जबड़ों में पूरो ने केवल लाजो का पिंजर देखा, लाजो की कैद खत्म हो गई थी। आज तो वह स्वयं ही उस घर के पिंजर में फँसी हुई थी। हमीदा नाम ने उसे बचा लिया।[7] जब रशीद पूरो को भगाकर लाया था तो उससे निकाह कर उसका नाम 'हमीदा' रख लिया था और उसके शरीर पर नाम खुदवा दिया था। पूरो कहती है कि नहीं लाजो कोई न कोई तुझे लेने जरूर आएगा। उन्माद का दौर समाप्त होता है तो सामान की अदला– बदली की तरह नारियाँ भी लौटाई जाती हैं। आज किसी को किसी से शिकायत नहीं, सब अपनी बेटियों, बहनों को ले जा रहे हैं। नारी बार–बार मरकर इस धरती पर जीवित हो गई है। लाजो को लेने उसका भाई एवं पति आता है। पूरो अपने मन में कहती है। ''चाहे कोई लड़की हिन्दू हो या मुसलमान, जो भी लड़की लौटकर अपने ठिकाने पहुँचती है, समझो कि उसी के साथ पूरो की आत्मा भी ठिकाने पहुँच गई ।''[8] यह कहकर पूरो ने अपनी आँखों को धरती की ओर झुकाकर रामचन्द्र को अन्तिम प्रणाम किया । लारी चल पड़ती है । खाली सड़क पर धूल उड़ने लगी ।

### नर–नारी के अटूट संबंधों की कथा–'सागर और सीपियाँ' (कादम्बिरी)

प्रस्तुत उपन्यास उस कटु यथार्थ को समेटे हुए है, जिसकी जमीन पर ऐसी घटनाएँ होती हैं, जो मन के फूलों को पनपने नहीं देतीं । इसी उपन्यास में किसी की वह चेतना भी सामने आती है, जो अपनी जिन्दगी के सवाल को अपने हाथ में ले लेती हैं। इस उपन्यास पर आधारित 1975 में 'कादम्बिरी' नाम से एक फिल्म बनी थी। चेतना, सामाजिक चलन के ख्याल को हाथ से परे हटाकर अपने प्रिय को अपने मन में, और मन में हासिल कर लेती है। चेतना इस मिलन और दर्द के स्थल पर खड़ी है।

'सागर और सीपियाँ' उपन्यास का नायक इकबाल और नायिका चेतना है। यह उपन्यास दो शब्दों सागर और सीपी से मिलकर बना हैं। जिस प्रकार से सीपी जुड़ी हुई है, उसी प्रकार पुरूष से स्त्री भी जुड़ी हुई है। उसका रूप चाहे माता, बहन, पत्नी प्रेमिका आदि कोई भी हो सकता है। नारी की पीड़ा कैसी होती है, इसका अन्दाजा इस उपन्यास से लगाया जा सकता है। नारी कितने कष्टों को सहकर और जहर का घूँट पीकर भी अपने सम्मान की रक्षा करने से नहीं चूकती । वे सागर से जुड़ी हुई सीपियों के समान हैं।

इकबाल की मां अनबरी का पिता रहमान धोबी है ''जिस अमीर आदमी के बंगले में उसकी डोली में बैठकर आई, औरतें भी अपने आपको बदनसीब समझती थीं। इकबाल की माँ अनबरी उस आदमी की हवेली में धुले हुए कपड़े देने के लिए गई थी । चौदह – पन्द्रह साल की बच्ची को जब उसके बीमार बाप ने भेजा होगा, उसे उस बच्ची की बदनसीबी का ख्याल बिलकुल नहीं आया होगा।[9] अनबरी इस अनहोनी घटना को भाँप नहीं पाई । वह उस अमीर आदमी के बलात्कार की शिकार हो जाती है, जिससे उसको एक बच्चा होता है, उसी का नाम इकबाल है। इकबाल का पिता वह अमीर आदमी, अनबरी को अपने पास नहीं रखता । वह तीन –चार शादियाँ करता है, परन्तु सभी पुत्र – विहीन रहती हैं। उनकी कोख सूनी रहती है, शायद यही एक शाप था। अमीर आदमी, अनबरी को खबर भिजवाता है कि वह उस लड़के इकबाल को उसे सौंप दे और वह स्वयं कहीं चली जाए । वह यह धमकी तक देता है कि इकबाल को उठवा लेगा या मार डालेगा ।अनबरी कहती है कि जो चीज प्राप्त नहीं हो पाती उसे छीना जाता है, इस डर से वह इकबाल को लेकर अपने मायके चली जाती है। वह बहुत कष्टों को सहकर इकबाल को अच्छे संस्कार देती है।

चेतना, सुमेर की बहन है जो कि इकबाल से प्रेम करती है। चेतना को इकबाल से एक लड़का जन्म लेता है, जिसका नाम अणुराज रहता है। उपन्यास की एक पात्र मिन्नी है। मिन्नी की शादी जग्गी से होती है। नरेश, मिन्नी का प्रेमी है। मिन्नी एवं जग्गी का एक लड़का नीलू है। उसके मरने के बाद मिन्नी तनावग्रसित रहने लगती है। एक दिन नींद की अधिक गोलियाँ खाकर वह स्वर्गवासी हो जाती है। सुमेर, चेतना का भाई है, वह बचपन से ही चम्पा से प्यार करता है। चम्पा भी सुमेर से प्यार करती है। चम्पा एक आर्टिस्ट है। वह दिल्ली के एक स्कूल में अध्यापिका भी है। सुमेर के दफ्तर में ही एक कामनी नाम की लड़की स्टेनो है। सुमेर और कामनी एक दूसरे से मिलते है, और दोनों में प्यार का सिलसिला शुरू हो जाता है। वे दोनों एक–दूसरे से प्रेम करने लगते हैं। शकुन्तला एक उच्च वर्गीय परिवार की लड़की है। शकुन्तला का पिता उसे घर से बाहर नहीं निकलने देता है। स्कूल भी जाती थी तो बंद बग्घी में बैठकर । शकुन्तला का पिता कोई भी साहित्य शकुन्तला के पढ़ने से पूर्व स्वयं पढ़कर देखता था कि उसमें मुहब्बत की दास्तान तो नहीं है। शकुन्तला के साथ एक घटना घटित होती है। वह जेल से छूटे हुए एक लड़के से मिलने जाती हैं । दोनों में प्रेम भरी बातें होती हैं। लड़का, शकुन्तला से जिस्म की माँग करता है और सकुन्तला उसकी इच्छा की पूर्ति कर देती है। वह चुनाव लड़ता है, और चुनाव में जीत भी जाता है। नेता बनने के बाद उसने अपने पिता के कहने पर दूसरी लड़की से शादी कर लेता है। बाद में शकुन्तला से फिर जिस्म की माँग करता है तो शकुन्तला यह कहकर टाल जाती है कि पहले शादी करें उसके बाद सब कुछ । वह लड़का मंदिर में जाकर पंड़ित से शादी की रस्म अदा कराकर फिर शकुन्तला से संबंध स्थापित कर लेता है। वह शकुन्तला को धोखा देता है, कभी भी उसे अपने घर नहीं ले जाता । बाद में शकुन्तला चम्पा के साथ दिल्ली के एक स्कूल में अध्यापिका का कार्य करने लगती है। चेतना भी कुछ समय के लिए एक फर्म में काम करने लगती है । सुमेर बम्बई के एक दफ्तर में नौकरी करता है। वह चेतना एवं अपनी

माँ को बम्बई में ही रखना चाहता है, परन्तु दिल्ली का घर न बिकने के कारण वे कुछ दिन दिल्ली में ही रहती हैं।

इकबाल पूना के अस्पताल में नौकरी करता है। अनबरी, इकबाल को तार देकर अपने पास दिल्ली बुला लेती है, और चेतना से उसकी शादी करवा देती है। वह यह इसलिए करती है कि उसने अपना मनोविज्ञान लगाकर यह सिद्ध कर लिया था कि अणुराज, चेतना और इकबाल का ही पुत्र हैं । क्योंकि इकबाल की पीठ पर चर्म के रंग का गहरा हल्का निशान था और अणुराज की पीठ पर भी वह निशान था। चेतना के न बताने पर भी भाँप जाती है कि वह इकबाल और चेतना का पुत्र है, यह बात सिर्फ चेतना, उसकी माँ और सुमेर को ही पता थी। चेतना ने इकबाल तक से यह बात नहीं बताई थी, क्योंकि वह यह सोचती थी कि शायद इकबाल यह न समझने लगे कि शादी करने की वजह से चेतना यह सब कह रही है । अनबरी की सूझबूझ से दोनों की शादी हो जाती हैं। अणुराज शादी के पहले ही हो गया था। चेतना के कहने पर कि मैंने जिससे प्यार किया है (इकबाल से) उसकी निशानी अपने पास रखूँगी । मजबूरी में इकबाल यह सब न चाहते हुए भी चेतना से शारीरिक संबंध बनाना पड़ता है। चेतना के यह जानने पर भी कि इकबाल उससे कभी भी शादी नही करेगा, उससे एक पुत्र प्राप्त करती है। पुत्र के जन्म की बात सुमेर, चेतना और उसकी माँ को ही रहती है। वह डॉक्टर को बताती है कि चेतना शादी – शुदा है। दूसरे लोगों से यह बताती है कि सुमेर के दोस्त का लड़का है, जो एयर क्रैश में मारा गया । वे अनाथालय में कह देती है कि यह समुद्र किनारे मिला है। दो दिन बाद जाकर चेतना उसे गोदीनामा ले लेती है । उसे वह बड़े प्यार से पालती है। शादी के बाद चेतना, इकबाल को बताती है कि अणुराज उनका ही बेटा है। अनबरी कहती है कि मैं पहले ही जान चुकी हूँ । चेतना की आँखों में आंसू छलक आए । उसने अपना सिर अम्मां की छाती पर रख दिया हो।[10]

## दस्यु निर्माण की उत्प्रेरक परिस्थितियों की दास्तान 'उनकी कहानी'(डाकू)

'उनकी कहानी' नामक उपन्यास अमृता जी की एक ऐसी रचना है, जिसमें डाकू समस्या के कारणों पर गहराई से विचार किया गया है। जन्म से कोई भी व्यक्ति अपराधी नहीं होता, उसके अपराधी बनने के मूल में वह परिस्थितियाँ होती हैं, जो उसे अपराधी बनाती हैं। डाकू समस्या के उन्मूलन की दिशा में प्रयास करने वालों के लिए अमृता जी का यह उपन्यास संकेत है कि वह उन परिस्थितियों पर विचार करें जो डाकू बनाती हैं। 'उनकी कहानी' अमृता जी की जुबानी से बड़ी मार्मिक और प्रभावोत्पादक बन गई ।

उपन्यास की नायिका रतना के पिता की हत्या कर पन्ना डाकू उसे गुलाब बाई के वैश्यालय में दस हजार रू. में बेच देता है, जहाँ राजू उर्फ राजबहादुर के पिता द्वारा पुलिस में गवाही दिये जाने पर पन्ना डाकू द्वारा उसकी भी हत्या कर दी जाती है। प्रतिशोध की आग में धधकते नायक व नायिका का मिलन परिस्थितियों के वशीभूत होता है। दोनों मिलकर दस्यु जीवन स्वीकार करते हैं और पन्ना की हत्या कर अपना बदला लेते हैं।

'उनकी कहानी' उपन्यास का नायक राजू एवं नायिका रतना उर्फ चम्पा है। उपन्यास के पात्रों में पन्ना डाकू एवं उसके दो साथी, राजू एवं उसके साथ विक्रम, लोकी, गोविन्द एवं लछमन हैं, जो निःस्वार्थ राजू का साथ सच्चाई की खातिर देते हैं।

आज अमृता जी हमारे बीच नहीं हैं, परन्तु उनकी लेखनी ने देश ही नहीं विदेश में भी भारतीय संस्कृति की छटा बिखेर दी है। उनके उपन्यास एवं कहानियों पर फिल्म एवं सीरियल बन रहे हैं। इस तरह रचना के माध्यम से वह आज भी जीवित हैं और हमेशा रहेंगी।

संदर्भ – ग्रन्थ


1. अमृता प्रीतम, रसीदी टिकट, पृ0 15–16.
2. वही, पृ0 18.
3. वही, पृ0 19.
4. वही, पृ0 20.
5. नवभारत, बिलासपुर, शनिवार, 09 मार्च 2013, पृ0 07
6. अमृता प्रीतम, चुने हुए उपन्यास (पिंजर), पृ. 65
7. वही, पृ.83
8. वही, पृ.91.
9. अमृता प्रीतम, सागर और सीपियाँ, पृ. 34.
10. वही, पृ. 114.
11. अमृता प्रीतम, उनकी कहानी.